कलीसिया अध्याय 12

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* 2 कुरिन्थियों 7-10

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (2 कुरिन्थियों 7-10) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) [यूहन्ना में कुँजी वचन] यूहन्ना के मुख्य वचनों का पुनरावलोकन

यूहन्ना से अन्तिम 5 आयतों को दो दो लोग साथ मिलकर **पुनरावलोकन** करें।

1.यूहन्ना 1:14. और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी,जैसे पिता के इकलौते की महिमा।

2.यूहन्ना 1:16.क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।

3.यूहन्ना 2:25.और उसे आवश्यकता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे,क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है।

4.यूहन्ना 3:16. क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।

5. यूहन्ना 4:24.परमेश्वर आत्मा है,और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* यूहन्ना 4:1-54

परिचय। एक साथ मिलकर अध्ययन करते हुए बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों को इस्तेमाल करें। यूहन्ना 4:1-42 में दर्शाया गया है कि यीशु अपने आप को सामरी स्त्री पर प्रगट करता है। यूहन्ना 4:43-54 में दर्शाया गया है कि यीशु ने अपने आपको गलीलियों पर प्रगट किया। यूहन्ना 3 और यूहन्ना 4 में कुछ महत्वपूर्ण विविधताएं पायी जाती हैं। यूहन्ना 3 अध्याय में,यीशु मसीह एक यहूदी से बात कर रहे हैं जो एक उच्च अधिकारी भी है। लेकिन यूहन्ना 4 में,यीशु एक महिला से बात कर रहे हैं, जो सामरिया की रहने वाली थी और जीवन अनैतिक था।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 4:1-54 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

4:10

खोज1. **साधारण जल और जीवन के जल में जो यीशु हमें देता है, क्या फरक होता है।**

यूहन्ना 4:10 में यीशु ने कहा,"यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला, तो तू उससे माँगती और वह तुझे जीवन का जल देता।" जब यीशु ने जीवन के जल के बारे में बात की, तब सामरी स्त्री को लगा कि यीशु साधारण जल के बारे में बोल रहे हैं, जो वह कुँए से निकाल सकती थी। उसने सोचा कि यीशु ज़मीन से फूटने वाले सोतों से निकले वाले पानी के उन बुलबुलों के बारे में बोल रहा है जो कुँए के तल में निकलते हैं। इसीलिए उसने कहा कि यीशु के पास तो रस्सी से बंधी हुई बाल्टी भी नहीं है जिससे वह पानी निकाल सके।

ऐसा प्रतीत होता है कि कुलपति याकूब ने इस कुँए को खोदा था इसीलिए सामरी स्त्री ने पूछा कि क्या वह कुलपति याकूब से बड़ा है। लेकिन यीशु ने कहा, "जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा,परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा,वह फिर अनन्तकाल तक प्यास न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।" यीशु मसीह उससे जीवन के जल अर्थात उद्धार के बारें में बात कर रहा था जो पवित्र आत्मा उसको प्रदान करने वाला था। उसने साधारण जल और जीवन के जल में भेद किया। जब भी कभी आप साधारण जल पीते है तो निश्चय ही आपको दुबारा प्यास लगेगी,लेकिन यदि आप जीवन जल अर्थात (उद्धार) पाते हैं जो यीशु हमें देता है, आप हमेशा के लिए सन्तुष्ट हो जाएंगे। आम पानी आपके प्राण से बाहर रहता है और आपके प्राणों की जरूरत को पूरा नहीं कर सकता। लेकिन जीवन का जल(उद्धार और उसकी सारी आशीषें) आप प्राण में प्रवेश करके आपकी अर्न्तात्मा की प्यास को सन्तुष्ट करता है। अत: अनन्त सोते या झरने के समान, यीशु मसीह का जीवन जल भी आपको तरो ताज़ा और सन्तुष्ट करने में कभी विफल नहीं होगा।

खोज 2. यीशु किस प्रकार उस स्त्री को कायल करके जीत लेते हैं।

नीतिवचन 11:30 में लिखा है, "बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है"। यीशु हमारे सामने उदाहरण देते हैं कि उसने किस प्रकार से सामरी स्त्री को जीता। यीशु को यहूदा से गलील के मार्ग में,सामरिया से होकर गुज़रना अवश्य था। एक दोपहर वह थका हुआ एक कुँए के पास बैठ गया, और उसके चेले पास के नगर में भोजन लेने गये थे। वहीं पर वह एक चरित्रहीन सामरी स्त्री से उसे परमेश्वर के राज्य के लिए जीतने की मनसा से बात करने लगा।

(1) यीशु ने उसके घड़े में से थोड़ा सा पानी पीने के लिए मांगने के द्वारा उससे सहायता मांगी। किसी भी व्यक्ति के जीवन में प्रवेश करने का सबसे प्रभावशाली तरीका उस व्यक्ति से कुछ मदद मांगना या उसकी कुछ मदद कर देना है। यीशु ने दोनों ही तरफ से काम किया। उसने महिला से पानी मांगा और उसके सामने जीवन जल रखने का प्रस्ताव रखा।

(2) यीशु ने यह कह कर **उसमें जिज्ञासा उत्पन्न की** कि, " ,"यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला, तो तू उससे माँगती और वह तुझे जीवन का जल देता"। उस सामरी स्त्री ने यह सोचा कि यीशु (आत्म-समपन्न)यहूदी है और उसे मदद की जरूरत है और वह सामरी स्त्री उसकी जरूरत को पूरा करने में सक्षम है। लेकिन यीशु ने तो मेज़ ही पलट दी और उसे जता दिया कि वह स्त्री एक जरूरतमन्द स्त्री है, उसे जीवन के जल की आवश्यकता है और यीशु स्वयं जल का वह स्रोता है जो उसे वह जल दे सकता है। इससे उसकी जिज्ञासा बढ़ गयी। लोगों की जिज्ञासा बढ़ाने के लिए लोगों को बताएं कि परमेश्वर कौन है और वह उन्हें क्या देना चाहता है।

(3) यीशु ने यह कहते हुए उसमें **सन्तुष्टि प्राप्त करने की लालसा को उसकाया**,"परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा,वह फिर अनन्तकाल तक प्यास न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।" यीशु ने साधारण जल और जीवन के जल में भेद किया। जब भी कभी आप साधारण जल पीते है तो निश्चय ही आपको दुबारा प्यास लगेगी,लेकिन यदि आप जीवन जल अर्थात (उद्धार) पाते हैं जो यीशु हमें देता है, आप हमेशा के लिए सन्तुष्ट हो जाएंगे। आम पानी आपके प्राण से बाहर रहता है और आपके प्राणों की जरूरत को पूरा नहीं कर सकता। लेकिन जीवन का जल(उद्धार और उसकी सारी आशीषें) आप प्राण में प्रवेश करके आपकी अर्न्तात्मा की प्यास को सन्तुष्ट करता है। अत: अनन्त सोते या झरने के समान, यीशु मसीह का जीवन जल भी

आपको तरो ताज़ा और सन्तुष्ट करने में कभी विफल नहीं होगा। किसी भी व्यक्ति के भीतर अनन्त जीवन के प्रति लालसा उत्पन्न करने का सबसे अच्छा तरीका उसके सामान्य जीवन के साथ सामान्य जीवन की तुलना करना है।

(4) जा अपने पति को बुला ला कह कर उसने उस स्त्री के **विवेक को जागरूक किया।** यीशु जानते थे कि उसमें तब जीवन जल की सच्ची प्यास उत्पन्न न होगी जब तक कि वह अपने पाप को पहिचान नहीं जाती। जैसे ही यीशु ने उसके पति का जिक्र किया, उसे शर्मिन्दगी हुई, क्योंकि उसके पास कोई एक पति नहीं था। वह एक अनैतिक जीवन व्यतीत कर रही थी। लोगों के मन में उद्धार के निमित्त सच्ची जागरूकता उत्पन्न करने के लिए लोगों को अपने गुनाहों का अहसास होना जरूरी है।

(5) यीशु ने धीरे धीरे करके अपनी पहिचान को उसके सामने प्रगट किया। जैसे जैसे उसने अपने आपको उस स्त्री पर प्रगट किया वैसे ही धीरे धीरे उस स्त्री ने (अपनी असफलताओं, मूर्तियों और गुलामी का)अंगीकार किया। उसने पहले यीशु को एक यहूदी बाद में एक भविष्यद्वक्ता और अन्त में एक मसीह के रूप में देखा।

कदम 3. प्रश्न.	व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 4:1-54 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें।(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

4:20-24

प्रश्न 1. सच्ची आत्मिक आराधना क्या है?

नोट्स।

(1) वह स्थान जहां मसीही लोग अराधना करते हैं।

सामरियों और यहूदियों में उस स्थान को बहुत अधिक महत्व दिया जाता था जहां पर वे लोग आराधना के लिए मिला करते थे। वे विश्वास करते थे कि उन्हें अपने देश में आराधना के लिए एक इमारत की आवश्यकता थी। यहूदी मानते थे कि परमेश्वर की आराधना केवल यरूशलेम के मन्दिर में ही की जानी चाहिए। जबकि सामरी लोगों को मानना था की परमेश्वर की आराधना गेरेजिम पहाड़ पर बने मन्दिर में की जानी चाहिए। जरा भारतवर्ष में बने मन्दिरों, तुर्की में बनी मस्ज़िदों और यूरोप में बने चर्चो की इमारतों के बारे में सोच कर देखिये। लेकिन यीशु ने जवाब दिया,"हे नारी वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे और न यरूशलेम में। परन्तु वह समय आता है वरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है।" यीशु ने सिखाते हैं कि आराधना के लिए स्थान महत्वपूर्ण नहीं है वरन महत्वपूर्ण वह रवैया व सत्य जिससे हम परमेश्वर की आराधना करते हैं। इसलिए सच्ची आराधना में शारीरिक अवस्थाएं कोई बाधा नहीं वरन वह गलत रवैया और दिमाग में भरा झूठ है जिसके द्वारा वे आराधना करते हैं। मसीही लोग अपने घर में, कलीसिया की इमारत में, बन्दीगृह में या खुले मैदान कहीं भी परमेश्वर पिता की आराधना कर सकते हैं।

(2) वह सच्चाई जिसके अनुसार मसीही आराधना करते हैं।

वह रवैया जिसके द्वारा हमारा मन आराधना करता है आराधना के लिए इस्तेमाल की जाने वाली वस्तु की सच्चाई या प्रकाशन पर आधारित होता है। परन्तु परमेश्वर की सच्चाई क्या है? परमेश्वर से जुड़ा सत्य वह नहीं है जो लोग परमेश्वर के बारे में कहते हैं या लोग परमेश्वर के सन्दर्भ में विश्वास करते हैं परन्तु सत्य वह है जो परमेश्वर स्वयं सृष्टि में और बाइबल में(भजन 19)में प्रगट करते हैं। परमेश्वर ने हम पर प्रगट किया है कि वह कौन है और वह कैसा है। परमेश्वर ने हम पर अपनी विशेषताएं,अपने वचन और अपने कामों को प्रगट किया है(इब्रानियों1:1-2)।

परमेश्वर द्वारा हम पर प्रगट की गयी एक सच्चाई यह है कि परमेश्वर एक आत्मा है। परमेश्वर अपने आप में पूरी तरह आत्मिक है। वह पत्थर,पेड़,पहाड़,मन्दिर का देवता नहीं है, कि उसकी आराधना किसी पत्थर की मूर्ति के रूप में या किसी पेड़ के नीचे या किसी विशेष पहाड़ पर या किसी विशेष मन्दिर में की जाए। परमेश्वर गणित के आंकड़ों, शारीरिक

नियमों,शक्ति स्थान और जगत के समय के आधार पर परिभाषित किया जाने वाला या सीमित परमेश्वर नहीं है,क्योंकि परमेश्वर पूर्ण रूप में आत्मा और उन सारी प्राकृतिक वास्तविकताओं से परे है जिन्हें उसने स्वयं रचा है। परमेश्वर किसी विशेष धर्म या मत का देवता नहीं है और न ही वह एक भविष्यद्वक्ता या संस्थापक या अगुवे के द्वारा स्थापित किया गया परमेश्वर है।

एक मात्र विद्यमान परमेश्वर ने अपने आपको अपनी सृष्टि में और अपने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा मानव इतिहास में और अन्त में उसने अपने आपको मानवीय स्वरूप अर्थात यीशु मसीह के रूप में प्रगट किया है।

परमेश्वर ने अपने आपको निम्नलिखित लोगों पर प्रत्यक्ष रूप में प्रगट किया:

- दर्शन द्वारा अब्राहम पर(उत्पत्ति 15:1)
- हाजिरा और इश्माईल पर परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के रूप में(उत्पत्ति 16:7-13)
- जलती झाड़ियों के बीच में मूसा पर प्रगट किया(निर्गमन 3:2-6)
- तीन पुरूषों में होकर अब्राहम पर प्रगट किया(उत्पत्ति 18:1-14)
- यीशु मसीह में होकर मनुष्यों के रूप में(यूहन्ना 1:1,14;यूहन्ना 14:9-10)।

परमेश्वर ने बिना अपने ईश्वरत्व को त्यागे मानवीय स्वरूप को धारण किया और यीशु मसीह में होकर मानव इतिहास में प्रवेश किया।

परमेश्वर की आराधना उसी रूप में करनी चाहिए जिस रूप में उसने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है। परमेश्वर अपने स्वभाव में पूरी तरह से आत्मिक है। इसका अर्थ है कि उसका कोई शारीरिक रूप नहीं हैं और लोग उसे देख नहीं सकते। वह अनोखा है। वह ही एकमात्र परमेश्वर है(व्यवस्था 6:4)। परमेश्वर को छोड़ और कोई "ईश्वर" या "उद्धारकर्ता" (यशायाह 43:10-11)। वह अपने आप में स्वावलम्बी है और उसे आवश्यकता नहीं कि लोग उसकी सेवा करें(प्रेरितों 17:24-25)। वह एक व्यक्तिगत सम्बन्ध रखने वाला परमेश्वर है और लोगों को परमेश्वर से व्यक्तिगत सम्बन्ध ही बनाना चाहिए। लोग सर्वेश्वरवाद का अनुपालन करते हुए कभी भी परमेश्वर के साथ एक नहीं हो सकते। परमेश्वर की आराधना उसी तरीके से होनी चाहिए जिस तरीके से उसने अपने आपको बाइबल में यीशु मसीह में होकर व प्रकृति में प्रगट किया है। यूहन्ना 4:24 में यीशु ने कहा,परमेश्वर आत्मा है, और यह जरूरी है कि उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई में की जाए"। इसलिए सच्ची आराधना केवल उस परमेश्वर के लिए ही समर्पित है जिसने अपने आपको प्रकृति व बाइबल में और अपने उद्धार के कामों में प्रगट किया है।

(3) जिस आत्मा में होकर मसीही लोग आराधना करते हैं।

जिस रवैया में हम अपनी आत्मा में परमेश्वर की आराधना करते हैं वह आराधना करने के बारे में परमेश्वर की सच्चाई के प्रति आज्ञाकारिता पर निर्भर करता है। बहुत से धार्मिक लोग मानते हैं कि आराधना करने के तरीके में प्रार्थना करने की अवस्था, निर्धारित प्रार्थनाएं या मंत्र, प्रार्थना के नियुक्त स्थान,विशेष धार्मिक पर्व और परिधानों, भोजन और पीने, उपवास,तीर्थ स्थानों की यात्रा, दान दक्षिणा इत्यादि मायने रखता है। उदारहण के लिए,यहूदी लोग खड़े होकर अपने हाथों को उठाये हुए या यरूशलेम की ओर मुँह करके घुटने टेककर प्रार्थना करते हैं, प्रतिवर्ष तीन बार यरूशलेम की तीर्थ यात्रा पर जाते हैं, कोई अशुद्ध भोजन नहीं खाते, प्रति सप्ताह दो बार उपवास रखते हैं, और उन्हें अपनी कमाई में से तीन अलग अलग तरीके के दशमांस देने पड़ते हैं!

इसके बावजूद, हर प्रकार की आराधना परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली नहीं होती। न ही हर एक तरीके का कलीसिया में इस्तेमाल किया जा सकता है। उदारहण के तौर पर, यशायाह 1:13-15 में परमेश्वर ने कहा,"व्यर्थ अन्नबलि फिर मत लाओ;धूप से मुझे घृणा है....मुझे महासभाओं का प्रचार करना बुरा लगता है...नियम पर्वों के मानने से मैं जी से बैर करता हूँ.. .तुम कितनी भी प्रार्थना क्यों न करो,तौभी मैं तुम्हारी न सुनूँगा।" इसलिए मसीहियों को अपने विश्वास का दिखावा नहीं करना चाहिए, लेकिन उनकी आराधना आत्मा में होनी चाहिए। मसीहीयों को क्षमा की आत्मा के साथ, अपने पापों को अंगीकार करते हुए, अपनी आत्मा को समर्पित करते हुए, प्रतिबद्धता के साथ परमेश्वर के सत्ता व उसके कामों के लिए उसकी स्तुति और उसका धन्यवाद करते हुए परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। अत: सच्ची आराधना में सम्पूर्ण भीतरी मनुष्य और सम्पूर्ण दैनिक जीवन शैली शामिल होती है।

(4) जिस नम्रता के साथ मसीही लोग अराधना करते हैं।

यूहन्ना 4:23 में लिखा है कि आत्मा और सच्चाई में आराधना करने वाले वे अराधक हैं जिन्हें परमेश्वर मन से चाहता है। इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर एक लोगों की खोज में हैं जो अपने आपको ऐसा अराधना बनाते हैं। बल्कि, इसका मतलब यह है कि परमेश्वर बचाये गये लोगों को इस प्रकार का अराधक बनाने की ललक रखता है! लोगों को खोजने और उन्हें उद्धार देने के लिए परमेश्वर पिता ने पहल की है(लूका 19:10)। वह बचाए गये लोगों को आत्मा और सच्चाई से अराधना करने वाले लोगों में परिवर्तित करने के द्वारा परमेश्वर उस उद्धार (फिलिप्पियों 1:6)को पूर्ण करने की पहल कर रहा है।

4:27

प्रश्न 2. चेले यीशु को उस स्त्री से बात करता देखकर हैरान क्यों हो गये थे?

नोट्स।

यूहन्ना 4:27 में, यीशु के चेले यह देखकर हैरान थे कि यीशु उस महिला से बात कर रहा है। वे इसलिए हैरान थे, क्योंकि यहूदी शास्त्रियों की शिक्षा यह कहती है कि,"कोई भी पुरूष सड़क पर किसी स्त्री से बातचीत न करें, यहां तक कि अपनी पत्नी से भी नहीं। आज बहुत से शास्त्री या धर्म प्रचारक महिलाओं पर भारी बोझ डाल देते हैं। वे सिखाते हैं कि स्त्रियों का वजूद केवल पुरूषों को प्रसन्न करने के लिए है;कि स्त्रियों को केवल बताए गये तरीके से ही वस्त्र पहिनना चाहिए; कि स्त्रियों को हमेशा घर में ही रहना चाहिए; कि पुरूषों को दूसरी महिलाओं से बोलने का कोई अधिकार नहीं है; कि पुरूष केवल कुछ चुनी हुई महिलाओं से ही विवाह कर सकते हैं; कि पुरुष किसी भी कारण से अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है; कि पुरुष अपनी पत्नी को पीट और चाहे तो मार भी सकता है।

यीशु मसीह ने महिलाओं के आदर को लेकर दुनिया का दृष्टिकोण बदल दिया। उसने अपने चेलों को सिखाया कि महिलाओं की विमुक्ति का अर्थ क्या है। सच्ची महिला विमुक्ति का अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोग स्त्री और पुरूष के बीच बनाये उस भेद या अन्तर को नज़रअन्दाज़ करें जो परमेश्वर ने बनाया है। इसका मतलब यह भी नहीं है कि मनुष्य उन जिम्मेदारियों के प्रति अनाज्ञाकारी हो जो परमेश्वर ने विवाह और कलीसिया के अर्न्तगत पुरूष और स्त्री को सौंपा है। परमेश्वर की नज़रों में, महिमा का प्राण भी उतना ही बहुमूल्य है जितना कि पुरूष का(गलातियों 3:28)। और कलीसिया तथा घर में भी उनका सहयोग समान तौर पर मूल्यवान है। समाज में उनका सम्मान भी बराबर महत्वपूर्ण है। यीशु ने हमेशा स्त्रियों के साथ शुद्ध व कुलीन व्यवहार किया। हालांकि चेले यीशु को उस सामरी स्त्री के साथ बातें करते देख हैरान हुए, लेकिन किसी ने भी उससे कुछ पूछने की हिम्मत नहीं की कि, "तू उस स्त्री से क्या चाहता है?" अगर पूछा जाता तो जवाब जरूर होता कि वह उससे पीने के लिए पानी चाहता है। और न ही किसी ने पूछा," तू उससे क्यों बातें कर रहा है?" उसका जवाब सम्भवत: यह होता "मैं उसे जीवन का जल देना चाहता हूँ"। यीशु ने महिलाओं के साथ हमेशा दया और आदर के साथ व्यवहार किया है।

4:35-38

प्रश्न 3.यीशु ने बोने वाले और लवने वाले के बीच सम्बन्ध के बारे में क्या बताया?

नोट्स।

(1) इस अनुच्छेद में बोने वाले यीशु और सामरी स्त्री दोनों ही हैं।

यीशु ने सामरी स्त्री की आत्मा को जीता। इसके बदले में वह स्त्री गयी और जाकर अपने गांव के लोगों को जीत लिया। जब सामरी स्त्री कुएं से दस मिनट पैदल यात्रा की दूरी पर बसे हुए अपने नगर में पहुँची तो उसने यह नहीं कहा कि यीशु ही मसीह है, लेकिन उसने लोगों से आकर परखने के लिए कहा। उसने कहा,"आकर देखो....",ठीक इसी प्रकार से यीशु ने भी अपने दो चेलों के साथ किया था। उसने कहा, "इस व्यक्ति ने मुझे वे सारी बता दी जो मैंने की थी। कहीं यही तो मसीह नहीं?" ठीक यहूदियों के समान,सामरी लोग भी अपेक्षा करते थे कि मसीह व्यवस्थाविवरण 18:18-19 का भविष्यद्वक्ता होगा। अत: लोगों की भीड़ यीशु को देखने के लिए उमड़ पड़ी।

(2) आत्मिक फसल का कोई विशेष मौसम नहीं होता।

इसी बीच यीशु ने अपने चेलों से कहा,"क्या तुम यह नहीं कहते हो,चार महीने के बाद कटनी का समय आ जाएगा?" इस क्षेत्र में सामान्यत: कटाई का समय अप्रेल के महीने में हुआ करता था। जबकि, जिस समय में यीशु की मुलाकात सामरी

स्त्री से हुई वह महीना दिसम्बर का था। यह सम्भवत: 27 ई.प.दिसम्बर का महीना रहा होगा। दिसम्बर के महीने में गेहूँ की फलस पक कर तैयार नहीं होती।

लेकिन आत्मिक खेती काटने का कोई नियम समय या मौसम नहीं होता। वह फसल हमेशा काटने के लिए तैयार है। इस घटना में सुसमाचार के बीज बोने और अनन्त जीवन की फसल काटने के बीच में कोई समय अन्तराल नहीं था।यीशु ने सामरियों को अपने नगर से खेत में कुएं की ओर आते देखकर कहा,"अपनी आखें उठाकर देखो, खेत पके हैं।" यीशु स्पष्ट रूप से अपनी बातों में दर्शा रहे थे कि वह उसके राज्य के लिए इन लोगों की कटनी काटने के लिए अपने चेलों को भेज रहे हैं। इस स्थान पर आमोस 9:13 की भविष्यद्वाणी पूरी होती है। भविष्यद्वक्ता आमोस ने भविष्यद्वाणी की थी,"देखो, ऐसे दिन आते हैं कि हल जोतनेवाला लवने वाले को और दाख रौंदनेवाला बीज बोनेवाले को जा लेगा; और पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा, और सब पहाड़ियों से बह निकलेगा।

(3) बाइबल के इस अनुच्छेद में लवने वाले चेले हैं।

यूहन्ना 4:38 में यीशु ने कहा,"मैं तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा, जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया: और ने परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए।" यीशु मसीह और सामरी स्त्री दोनों ने ही सामरिया के लोगों में काम किया-यीशु ने सामरी स्त्री के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप में और सामरी स्त्री ने सामरिया के लोगों में सीधे तौर पर काम किया। और अब यीशु ने अपने चेलों को अनन्त जीवन की फसल काटने के लिए भेज दिया।

(4) आत्मिक जगत में सामान्य तरीका यह है कि एक व्यक्ति बोता है और दूसरा उसे काटता है।

यूहन्ना 4:37 में यीशु ने कहा," इस पर यह कहावत ठीक बैठती है, कि बोनेवाला और है और काटने वाला और।"परमेश्वर के राज्य में हर एक काम करने वाला जन एक ही समय में बोने वाला और लवने वाला दोनों होता है। वह किसी दूसरे की बोयी हुई खेती को काटता है। और वह ऐसी फसल को बोता है जिसे पकने पर दूसरे काटते हैं। इस तरह परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ योजना में, आपके लिए हमेशा लवने हेतू फसल होगी। या तो आपको स्वयं अपनी फसल काटने का अवसर मिलेगा नहीं तो आप जरूर यह सुनेगें कि जिस खेतों पर आपने बीज बोया था उसकी फसल दूसरे काट रहे हैं। इस तरह से, बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्दित होगें। मसीही कार्यकर्ता अपने बोने और काटने के काम को लेकर हमेशा आनन्दित हो सकते हैं। प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 15:58 में कहता है, "सो हे मेरे प्रिय भाइयो,दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है। यह यशायाह 55:10-11 में की गयी भविष्यद्वाणी का पूरा होना है," जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं, जिस से बोने वाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है। उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा हैं उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिए मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा। सत्य पर भरोसा रखें:"फसल जरूर होगी।"

4:44-45

प्रश्न 4. यीशु अपने नगर गलील में वापस क्यों गया, जबकि वह जानता था कि भविष्यद्वक्ता को अपने घर पर कोई आदर नहीं मिलता?

नोट्स।

मत्ती 13:53-58 में यीशु गलील में बसे अपने घर वापस आये। लोगों ने यीशु का अनादर किया और यीशु ने कहा,"भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नही होता।" गलील यीशु का अपना देश था। जब वह यरूशलेम में था तो बहुत से लोगों ने उसके द्वारा किये गये चमत्कारों को देखकर उस पर विश्वास किया। मन्दिर की सफाई करने के बाद, पहली बार उसका फरीसियों से सीधा सामना हुआ। यीशु एक मकसद के तहत गलील गया था, क्योंकि गलील में उसे इस बात से डरने की कोई जरूरत नहीं थी कि लोग उसका इस तरह से आदर करेगें कि जिसकी वजह से फरीसी उस से लड़ने या झगड़ने लगें। गलीलियों ने उसका स्वागत केवल इसलिए किया था क्योंकि वह एक चमत्कार करने वाला था(पद 45)। लेकिन उन्होंने उसका आदर नहीं किया। और वे लोग बिना विश्वास के किसी पर विश्वास करते भी नहीं थे। जब यीशु ने उन्हें शिक्षा दी कि जब तक वे उसे अपने हृदय में ग्रहण न करें और विश्वास के अनुसार जीवन न व्यतीत करें तब तक अनन्त जीवन को प्राप्त नहीं करेगें, बहुत से गलील वासी उसे छोड़कर चले गये(यूहन्ना 6:66)

कदम 4. **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 4:1-54 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव

1. यूहन्ना 4:1-54 से सम्भव अनुप्रयोगों की सूची।

4:1 जिस प्रकार से यीशु ने स्वयं किया, जाकर चेले बनाएं(मत्ती 28:19)।

4:7 लोगों ने मदद मांगकर या दूसरों की मदद करने का प्रस्ताव रखकर उनसे सम्पर्क साधने की पहल करें।

4:10 परमेश्वर व परमेश्वर क्या कर सकता है बताने के द्वारा लोगों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करें।

4:13-14 आत्मिक बातों की तुलना दैनिक जीवन में काम में आने वाली चीजों के साथ करके उनके भीतर आत्मिक सच्चाई को जानने की इच्छा को उसकाएं।

4:16-18 लोगों को उनके पापों के प्रति निरूत्तर होने में सहायता करने के द्वारा उनके मन में उद्धार प्राप्त करने की सच्ची इच्छा को उजागर करें।

4:19. लोगों के सामने अंश अंश करके प्रगट करें कि यीशु कौन है, और लोगों के ऊपर प्रकाशनों का ढेर न लगा दें।

4:21-24. मन के सही रवैये के साथ परमेश्वर की आराधना करें। बाइबल में अपने आपको प्रदर्शित करने वाले परमेश्वर की आराधना करें।

4:21-24. आत्मा में सही रवैये के साथ परमेश्वर की आराधना करें। केवल रीति रिवाजों को पूरा करने के द्वारा नहीं परन्तु मन की ईमानदारी के साथ परमेश्वर की आराधना करें।

4:27. बिना किसी पक्षपात या भेद किये हुए जैसे आप पुरूषों का आदर करते हैं वैसे ही स्त्रियों को भी आदर करें।

4:32.34. सादा खाना खाएं, लेकिन कभी आत्मिक भोजन करना न भूलें: अर्थात परमेश्वर की इच्छा व उसके कामों को पूरा करना, जिसके लिए परमेश्वर ने आपको चुना है।

4:37-38 जहां कहीं सम्भव हो सुससमाचार बोओ और परमेश्वर के राज्य के लिए कटनी काटो।

4:42. सुनिश्चित करें कि आप केवल दूसरों की कही बातों पर ही विश्वास करनेवाले न ठहरे परन्तु यीशु मसीह पर आपका विश्वास आपके व्यक्तिगत विश्वास व अनुभवों पर आधारित हो।

4:44. अगर आपको एक प्रचारक के रूप में अपने निवास स्थान पर आदर न मिले तो आप दूसरे स्थान में चले जाएं(मत्ती 10:11-15)

4:48-53. स्वीकार करें कि आप तब और ज्यादा धन्य होते हैं जब आपने न यीशु को और न उसके चमत्कारों को अपने जीवन में देखा है फिर भी आप उस से प्रेम करते हैं।(यूहन्ना 20:29)।

2. यूहन्ना 1:1-18 के आधार पर व्यक्तिगत अनुप्रयोगों या रीतियों के उदाहरण

मैं भी यीशु के समान काम पूरा करने वाला बनना चाहता हूँ। मैंने यीशु पर विश्वास करना प्रारम्भ कर दिया और मैं उस पर लगातार विश्वास करना चाहता हूँ चाहे मुझे कितनी ही समस्याओं का सामना क्यों न करना पड़े। यीशु ने कहा,"मेरी भोजन मेरे भेजने वाले की इच्छा पूरी करना और उसके कामों को पूरा करना है।" मैं भी अपने आपको परमेश्वर की इच्छा व उसके कामों को पूरा करने के लिए समर्पित करता हूँ, जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है। मैं तब भी आनन्दि रहना चाहता हूँ जब मैंने बोया तो हो लेकिन काटने को न मिला हो। मैं तब भी आनन्द मनाना चाहता हूँ जब मैं उस खेती को काटूँ जिसे दूसरों ने बोया हो। कई बार मैं बोता हूँ और कई बार मैं काटता हूँ। मैं एक बात को जानता हूँ कि परमेश्वर की सिद्ध योजना में हमेशा काटने के लिए फसल होगी! या तो मुझे स्वयं वह फसल काटने का सौभाग्य मिलेगा या फिर यह सुनकर मुझे आनन्द होगा कि जो मैंने बोया था उसे दूसरे काट रहे हैं। इस तरह से बोने वाला और लवने वाला दोनों आनन्द मनाएंगे।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 1:1-18 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 4के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3.परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **2 कुरिन्थियों 11-13** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। (1)**दोनो विश्वासी: 2 कुरिन्थियों 6:14** याद करें व मनन करें(श्रृंखला च)। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5.बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगली बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। यूहन्ना 1:1-18। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

6.प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें। .